



केवल मूल्यांकनकर्ता के उपयोग हेतु!

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

32 पृष्ठीय

केवल परीक्षक द्वारा भरा जावे। प्रश्न क्रमांक के सम्मुख प्राप्तियों की प्रविष्टि करें।

प्रश्न क्रमांक	पृष्ठ क्रमांक	प्राप्तियों में	प्रश्न क्रमांक	पृष्ठ क्रमांक	अंकों में
1			17		
2			18		
3			19		
4			20		
5			21		
6			22		
7			23		
8			24		
9			25		
10			26		
11			27		
12			28		
13					
14					
15					
16					

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे ↓

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे

प्रमाणित किया जाता है कि अन्दर के पृष्ठों के अनुरूप मुख्य पृष्ठ पर अंकों की प्रविष्टि एवं अंकों का योग सही है।

निर्धारित मुद्रा : नाम, पदनाम, मोबाईल नम्बर, परीक्षक क्रमांक एवं पदांकित संस्था के नाम की मुद्रा लगाएं।

उप मुख्य परीक्षक के हस्ताक्षर एवं मुद्रा

परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा

श्रीमती वनि
UJ-534

श्रीमानता भारद्वाज
UJ-547

16/11/20

प्रश्न क्र.

६.

असत्य

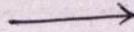
प्रश्न क्र० ४. (५)

(क)

(ख)

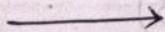
B
S
E

कथानक



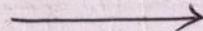
कहानी

अस्कृत के मूल शब्द



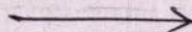
तत्सम

शशोधर बाबू



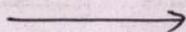
सिल्वर वैकिंग

अंतर्गम आकांक्षार



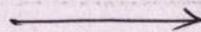
डायरी

हीरबहा राय बच्चन



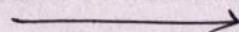
हालावाद

प्रगतिवाद



देशज

शशोधरा



उपकृतकाल्य

$$25 + 3 = 28$$



प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. ५ (5)

307

मनजो - दड़ो

308

15-20 मीनिट मीनिट मीनिट | मिनट

309

पुष्पन्त कुमार

B

S 308

जोक

E 309

उन दिनों |

308

दो

306

की मुश्किल मुश्किल से बचना | किसी बड़ी समस्या से बचना |

प्रश्न क्र. ६ (6)

30

भावितन के आने से महादेवी बर्मा अधिक देहती हो गई थी वक्ष
 व्योकि भावितन महादेवी जी को अपने रंग में रंग



प्रश्न क्र

दिया था। शक्तिन मदीदेवी जी को अपने हिसाब से खान-पान कराती थी। शक्तिन ने मदीदेवी जी को अपने अनुसार मदी से जुड़ा, अरुत व अहज देहाती बना दिया था।

प्रश्न क्र. 6. (3)

B₃₀

कहानी

उपन्यास

S

F₉

कहानी एक ही कथा पर आधारित होती है एवं कहानी पात्र भी कम होते हैं।

उपन्यास कई कथा व प्रसंग से मिल कर बनता है एवं उपन्यास में पात्र भी अधिक होते हैं।

9.

कहानी का आकार छोटा होता है एवं गति बड़ी तीव्र होती है।

उपन्यास का आकार बड़ा होता है एवं गति धीमी होती है।



प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. c (8)

30. (निपात) शब्द वो शब्द होते हैं जिन्हें किसी शब्द के आगे या बाद में लगा का शब्द के अर्थ में विशेष बन देते हैं।

रूप :- श्री, तो, मात्र आदि

वाक्य प्रयोग :- मुझे श्री किताब चाहिए।

B
S
E

प्रश्न क्र. e (9)

9. राम अयोध्या आ जाना।

ललिता एक फूलों की माला बाजार से ले आई। लाई।

प्रश्न क्र 90 (10)

मुअनजो - दड़ो की नगर नियोजन की दो विशेषताएं लिखें।

प्रश्न क्र.

9. सीधे मुअनजों - दड़ों के चार पक्की इट से बनाए गये हैं
 एवं नगर नियोजन बहुत ही आकर्षक है।

मुअनजों - दड़ों के चारों में स्नानघर भी बने हुए हैं
 एवं नालियों का योजन भी अही प्रकार से
 किया है।

मुअनजों - दड़ों में सबसे ज्यादा स्नानघर, कुइरों, कुंड
 आदि प्राप्त हुए हैं एवं रसोई घर भी बनाए गए हैं।

प्रश्न क्र. 99 (11)

30. अमाचार लेखन की सबसे लोकप्रिय शैली उल्टा पिरामिड
 शैली है। इस शैली का क्लार्ड मेंबर पहले ही
 बना दिया जाता है। इस शैली में धीरे धीरे - धीरे
 खबर की पूरी जानकारी दी जाती है। कब, कैसे, कौन,
 कहाँ, क्या जैसे प्रश्नवाचक शब्दों के आधार पर
 पूरी खबर की जानकारी विस्तार में दी जाती है।
 इस शैली को अमाचार लेखन में बहुत लोकप्रिय माना
 जाता है।



प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. 92 (12)

30

बच्चे अपने माता-पिता की प्रत्याशा में नीड़ों से झांक रहे हैं। वे सुबह से स रात भोजन की खोज में अपने माता-पिता के दर लौटने की आशा में हैं। सुख से व्याकुल और अपने माता-पिता के ~~बल~~ वास्तव्य से वंचित बच्चे उनकी प्रतिक्षा में नीड़ों से झांक रहे हैं।

प्रश्न क्र. 93 (13)

30.

द्वितीय युग जिसे पुन जागरण काल के नाम से भी जाना जाता है उसके बाद धार्मिक युग आया जिस में कई कवियों ने अपने मान के भावों को व्यक्त करते हुए प्रेम औन्दर्य और रहस्यवाद में कई प्रसिद्ध-प्रसिद्ध रचनाएँ की।

लेखिका महादेवी वर्मा जी हैं जिनकी कई रचनाएँ प्रेम औन्दर्य, जागरण औन्दर्य एवं प्रकृति औन्दर्य से पूर्ण हैं। यामा, गारजा, नीहार, भक्तिन आदि प्रसिद्ध रचनाएँ।

धार्मिक कवियों की दो प्रमुख विशेषता यथा है कि इस युग में



प्रश्न क्र.

सृष्टार रस, नई विभव, प्रतिविभव, ध्वज, अंलकारों का प्रचुर मात्रा में प्रयोग देखने को मिलता है। दूसरी विशेषता यह है कि इस युग की भाषा बहुत ही सरल व सरल है।

प्रश्न क्र. 98 (14)

B

C 30

महाकाव्य

रचनाकार

9. रामचरितमानस

तुलसीदास जी

10. कामायनी

जयशंकर प्रसाद

प्रश्न क्र. 99

30.

जब सहृदय के हृदय में स्थित दुःसाह का स्थिति भाव प्राप्त जब विभाव, अनुभाव एवं संचारी भाव के सहयोग में आता है तब वीर रस उत्पन्न होता है। राष्ट्रीयता, त्याग, शौर्य, बलिदान, वीरता आदि



प्रश्न क्र.

इस इस कि विशेषता है। इसका र-थाई भाव 'उत्साह' है।

प्रा :- बुन्देले दरबानों के मुख हमने सुनी कहानी थी।
~~सुब सुब~~ लड़ी मर्यानी वो तो आँसी वाली रानी थी॥

प्रश्न क्र 96 (916)

(महादेवी वर्मा)
 दो रचनाएँ :- नीरजा, नीहार, यामा आदि।

भाषा :- महादेवी जी एक बहुत सी अरल व अदल ~~व्यक्तित्व~~
 लेखिका थी। उनकी भाषा बहुत ही अरल व अधी हुई
 थी। उनकी भाषा में उर्दू, फारसी, बांग्ला और विदेशी
 भाषा के भी शब्दों का भी सुन्दरता से प्रयोग देखने को
 मिलता है। उन्होंने अपनी रचना में अस्कृत शब्दावली का
 भी प्रयोग किया है। भाषा को प्रभावशाली बनाने के
 लिए मुहावरों, लोकोक्ति, अनेक शब्द के लिए एक शब्द आदि
 का प्रयोग लड़ी ही आकर्षकता के साथ किया है।

शैली :- महादेवी वर्मा जी कि कुछ निम्न लिखित ~~रचनाएँ~~
 शैलियाँ हैं :-



प्रश्न क्र.

9. वर्णनात्मक :- जब उन्हें अपनी किसी रचना में किसी वस्तु, घटना, स्थान, व्यक्ति आदि का वर्णन करना होता था तब वह इस शैली का प्रयोग करती थी।

10. भावनात्मक शैली :- महादेवी वर्मा जी को भावों का बहुत अच्छा ज्ञान था वे मानव भावों को समझ कर अपनी रचना में बतानी थी। वह बहुत भावनात्मक लेखिका थी। दिन-रात, मजदूर शोषण, नारी अपमान के भावों को लिख कर समाज में सुधार लाना चाहती थी।

B
S
E

साहित्य में स्थान :- महादेवी वर्मा जी एक उच्चकोटी की लेखिका थी। उन्होंने गम्भीर विषयों को सरलता के साथ समाज के सामने प्रस्तुत किया। उनकी शक्ति रचना 'धामा' को पानपीठ पर पुरस्कार से भी सम्मानित किया जा गया। वह माँ अरस्वती और मीरा बाई की जैसे इस हिन्दी साहित्य के नीले आकाश में छुब नारे के अमान सदैव चमकती रहेगी। हिन्दी साहित्य उन्हें नमन करना है।



प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र १७ (१७)

30

मुदावरा

लोकोक्ति

१. मुदावरे को वाक्य के आगे या पीछे लगा कर भाषा को प्रभावी बनाता है।

लोकोक्ति तो अपने आप में ही अपूर्ण वाक्य होती है।

B
S
E

२. मुदावरे का कोई दूसरा नाम नहीं होता है।

लोकोक्ति को कदावतों के नाम से भी जाना जाता है।

मुदावरे भाषा में चमत्कार लाते हैं।

लोकोक्ति भाषा में स्थिरता लाती है।

४. उदाहरण :- अन्धों की लाठी

उदाहरण :- अन्धों में काना राजा

प्रश्न क्र १८ (१८)

उद्युतीर सहाय

दो उचनारों , हँसो, जल्दी हँसो , लोग घुल गए हैं।

प्रश्न क्र.

9. **शुभ्र पक्ष :-** भाषा :- अधुवीर अहाय जी एक बहुत ही कला परिष्कृत लेखक हैं। उनकी भाषा बहुत ही सरल व सहज है। उन्होंने मुहावरों का भी सचुर मात्रा में प्रयोग किया। उनकी भाषा में हिन्दी तद्भव शब्दावली और संस्कृत तत्सम शब्दावली का सुन्दरता के साथ प्रयोग किया है। उर्दू, फारसी, अंग्रेजी आदि भाषाओं के शब्दों की भी प्रयोग देखने को मिलता है।

B
S
E

9. **ध्वन्य एवं अलंकार :-** शब्दालंकार और आर्थालंकार दो प्रमुख अलंकार हैं। उन्होंने ध्वनों का भी प्रयोग किया है। उन्होंने मुक्तक ध्वन्य को एक नई पहचान दी है।

9. **शुभ्र पक्ष :-** विवेकीयता :- उनकी रचनाओं के गम्भीर भ्रष्टाचार विरोध विषयों को उन्होंने सरलता व सहजता से समाज के सामने प्रस्तुत किया है। वह भ्रष्टाचारियों के खिलाफ लिख कर समाज में सुधार लाना चाहते थे।

विवेकीयता एवं देश प्रेम :- अहाय जी की रचनाओं में देश प्रेम का स्वर



प्रश्न क्र.

रूपरेखा दिखाई देता है। वह एक देश भक्त थे। वह अपने राष्ट्र से बहुत प्रेम करते थे। उनकी रचनाओं में राष्ट्रीयता का स्वर है।

आदित्य में स्थान :- सदाय ही एक बहुत ही अच्छे कवि थे। उनकी रचनाओं आज भी लोगों को प्रेरणा देती है। उनकी रचनाएँ पढ़ कर एक हताश व निराशा व्यक्ति को भी आशा मिल जाती है। हिन्दी आदित्य उनकी आदित्य सेवा के लिए उनका हमेशा ऋणी रहेगा।

प्रश्न क्र 19 (19)

309 हमारा प्यारा भारत

302 एकता में अनेकता भारतवासीयों की विशेषता है।

303 हम अपने देश पर प्राण भी न्यौंदावर कर सकते हैं।



प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. १० (20)

प्रातः _____ हो।

अवधि :- यह पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'आरोह' के भाग १ के पाठ 'उषा' से ली गई है। उसके लेखक श्री रामशेर बहादुर सिंह जी हैं।

प्रसंग :- इस पद्यांश में कवि भोर का वर्णन कर रहे हैं। वह उस अद्भुत कर्मकृत्य पुरुष को देखकर बहुत प्रसन्न है।

व्याख्या :- कवि कहते हैं कि जब प्रातः में आकाश एक नीले-बाज के समान गहरा नीले रंग का हो रहा है वही से कही टलकी-टलकी सूर्य की लाल-लाल किरणें उस आकाश में आकाश मिल रही हैं। यह पुरुष मन को शान्ति का आभास करा रहा है। ऐसा लग रहा है माने किसी ने चोंके को बाज से लीप दिया है। उस आकाश में टलके-टलके आकेद कण भी दिखाई दे रहे हैं।

B
S
E



प्रश्न क्र.

गहरे नीले आकाश में सूर्य की कुछ किरणें ऐसी प्रतिबिम्बित हो रही हैं मानो किसी शिलजरा पर केसर के कुछ कण छल कर उभरे हों दिया है और केसर का लाल रंग बह गया हो। यह प्रत्यक्ष बहुरंग ही मनोरम है।

काव्य सौन्दर्य :- १. भाषा में सरलता, अरुणता व सहजता है।

२. ज्ञान व सम विद्यमान है।

३. भाषा के मनोरम प्रत्यक्ष का वर्णन बहुरंग ही

सुन्दरता के साथ किया है।

४. काव्य में अपेक्षित अलंकार भी हैं।

B
S
E

प्रश्न क्र. ७१ (21)

यह शिरीष - - - - - है।

संदर्भ :- यह गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'आरोह' के भाग दो से लिया गया है इस पाठ का नाम 'सिरी शिरीष के फूल' है। यह पाठ निबंध विद्या में लिखा गया है। इसके रचयिता श्री दजारी समाध द्विवेदी जी हैं।

प्रश्न क्र.

प्रश्न :- इस गद्यांश में कवि शिरीष के फूल के माध्यम से मनुष्य के जीवन की समस्याओं से निडरता से सामना करने का प्ण देता है।

व्याख्या :- कवि इस गद्यांश में कहना चाहते हैं कि शिरीष शिरीष का फूल अवधूत है यानी अन्यासी। वह कितनी भी विकट परिस्थिति में हार नहीं मानता है। उसी प्रकार किसी भी कोई भी समस्या अन्यासी के लपक में बाधा नहीं डाल सकती है। वह हर परिस्थिति का सामना करता है वह अपने से प्रकृति में चार चांदें लगा देता है। वह हर सुख को अहम कर लेता है। जब घरी आसमान गर्मी से जलते हैं तब वह अपनी सुन्दरता से अपना उस बनाता है। वह हर विकट परिस्थिति का सामना करने की तैरणा देता है।

बिज्ञेध :- शिरीष के पुष्प के माध्यम से जीवन मूल्यों की अमलगाथा गाया है।
 गद्य की भाषा सरल व सधी हुई है।

प्रश्न क्र.

निबन्ध

- उपरोक्त :-
१. प्रस्तावना।
 २. प्रदूषण क्या है।
 ३. प्रदूषण के प्रकार।
 ४. प्रदूषण से प्रकृति एवं मानव जीवन में हानि।
 ५. अपसंस्कार उपसंस्कार

१. प्रस्तावना :- आज हम प्रदूषण से चारों तरफ से बन्ध चुके हैं। हम मानवों ने मिल कर पूरा वातावरण दूषित कर दिया है। जिससे अब हमारा जीवन ही खतरे में आ गया है। अब तो खुली हवा भी नहीं है सांस लेने के लिए।

२. प्रदूषण क्या है :- प्रदूषण दो शब्दों से मिल कर बना है 'प्र' और 'दूषण'। हमने हमारे हाथों से पैड काट कर, जल दूषित कर, हमारे मौत के द्वार खोल दिए हैं। आने वाले समय में सांस लेना भी मुश्किल हो जाएगा। हम आज और हमारे आने वाले काल को नुकसान पहुँचा रहे हैं।



प्रश्न क्र.

उ. प्रदूषण के प्रकार :- प्रदूषण चार प्रकार के होते हैं :- वायु, जल, मिट्टी एवं ध्वनि।

उ.१. वायु प्रदूषण :- आज कल बहुत मोटर गाड़ियां चलती हैं जिससे से हानिकारक धुआं निकलता है और वायु को प्रदूषित कर देता है। कारखानों में से भी बहुत हानिकारक धुआं निकलता है जो ओबसीजन को दूषित करता है। आज के समय में शहरों में खुली वायु बची ही नहीं है।

उ.२. जल प्रदूषण :- आज हम हमारे पालतु जानवरों को, कपड़ों को, बरतनों को लें जाकर जल स्रोत में आफ कर रहे हैं इससे जल बहुत दूषित हो रहा है। कारखानों का खराब पानी भी नालियाँ, नालाबों में मिला दिया जाता है। जल से ही मानव का जीवन है अगर हमने यह सब ना रोकना तो मानव के जल पान के लिए भी जल नहीं बचेगा।

उ.३. मिट्टी :- प्लास्टिक का अमान, शैली आदि वस्तुएं मिट्टी को दूषित कर रही हैं जिससे पेड़-पौधों की मिट्टी भी दूषित हो रही है और वह जल्दी गीर जाते हैं।

B
S
E

प्रश्न क्र.

द्वानि प्रदूषण :- द्वानि प्रदूषण से आज कल कई बीमारियां हो रही हैं लोग अपने सुनने की शक्ति खो रहे हैं। लोगों का मानसिक अस्तुलन खराब हो रहा है।

8. प्रदूषण से प्रकृति एवं मानव जीवन में हानि :- प्रदूषण के कारण अब जीवन बहुत कठिन होना जा रहा है अनेक प्रकार की बीमारियां हो रही हैं। जल दूषित हो रहा है, पेड़ काटे जा रहे हैं, वायु धुँस से दूषित हो चुकी है, मिट्टी दूषित होने के कारण कृषि खराब हो रही है। मानव प्रदूषण के साथ नहीं जी सकता है।

समाधान :- हमें हमारे आस-पास के प्रदूषित जगह को साफ करना चाहिए। पेड़-पौधे लगाना चाहिए। जल प्रदूषण रोकना चाहिए। कम से कम बहानों का प्रयोग करना चाहिए एवं ज ज़्यादा से ज़्यादा पैदल यात्रा करना चाहिए। यदि हमारे स्वास्थ्य के लिए भी शुभ होगा।